प्रातः क्लास 30/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझाते हैं और बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बैठते जब यहाँ बैठते हैं, घर को तो याद करते होंगे। अभी अपने घर जाना है। जैसे लौकिक घर याद आता है ना। लौकिक घर से तुम यहाँ आये हो पारलौकिक घर का रास्ता जानने लिए। बाप बच्चों से बात करते हैं बच्चे समझते हो हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप आये ही हैं बच्चों को घर ले जाने। तो देखो यह पारलौकिक बाप कैसे बैठ पूछते हैं। मीठे2 बच्चे घर जाना है ना। मेरे को बुलाया भी तुमने है कि आकर घर ले चलो; परन्तु हम पतित हैं। पावन भी आपको बनाना पड़ेगा। समझते हो घर से हम पहले2 नई दुनिया में आये थे। यह याद है तब कहते हो बाबा फिर से हमको घर ले चलो; क्योंकि घर का पता नहीं है बच्चों को। बात कितनी छोटी है। सभी आत्माएँ बाप को पुकारती हैं बाबा आकर हमको अपने घर ले चलो। यहाँ तुम पराये घर(रावण–राज्य) में हो। यह सारा रावण राज्य है। रावण के घर में तुम बैठे हो। एक सीता की बात नहीं। तुम जानते हो जो भी मनुष्य मात्र हैं स्त्री वा पुरुष सभी में आत्मा है। वह आत्माएँ सभी एक बाप के बच्चे हैं। पहले तुमको यह पता नहीं था; क्योंकि सभी रावण के जेल में फँसे हुए थे। तुम अपन को कैदी समझते थे। मनुष्य कैद में दुखी होते हैं या गर्भ में भी सजा भोगते हैं तो दुखी होते हैं। गर्भ जेल कहा जाता है। सतयुग में तो है गर्भ महल। यहाँ गर्भजेल में बहुत दुख मिलते हैं। इसलिए कहते हैं बाहर निकालो। फिर हम पाप आदि नहीं करेंगे। जेल में नहीं आवेंगे। यहाँ भी मनुष्य जब दुखी होते हैं तो पुकारते हैं। यह है ही पतित दुनिया। जरूर पावन दुनिया सतयुग था। तब पुकारते हैं बाबा पतित–पावन आओ। अभी जो खुद ही पुकारते हैं वह पावन दुनिया की स्थापना तो कर न सके। बापू जी भी पुकारते थे तो खुद रामराज्य कैसे स्थापन करेंगे। अभी तो रामराज्य और रावण राज्य के अर्थ को भी समझ गये हो। आधा कल्प है राम राज्य अर्थात् ईश्वरीय राज्य। अभी है आसुरी राज्य। अभी बाप आये हैं ईश्वरीय राज्य अर्थात् स्वर्ग में ले जाने। तो यहाँ तुम बच्चे बैठे हो तो नालेज अन्दर में मंथन होनी चाहिए। समझते हो हम यहाँ आये हैं नई दुनिया स्वर्ग में जाने लिए। अभी तुम बच्चों को समझ पड़ी है। आगे इतनी समझ नहीं थी। अभी समझते हो आधा कल्प रावण राज्य में हम बन्द थे। विषय सागर में गोता खाते थे। क्षीर सागर स्वर्ग को, विषय सागर नर्क को कहा जाता है। त्रेता को भी पूरा स्वर्ग नहीं कहा जाता। अभी तुम बच्चों को सारी रचना के आदि–मध्य–अन्त की नालेज मिलती है। पहले थोड़े ही पता था। कब कोई ने सुनाया भी नहीं। बाप को जानते थे? भला अपने आत्मा को जानते थे? आत्मा भृकुटि के बीच सितारे मिसल है। बस सिर्फ इतना ही जानते थे कि वह सितारा है। बाकी यह थोड़े ही मालूम था इतनी छोटी सी आत्मा में इतने 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। मैक्सीमम और मिनीमम थोड़े ही जानते थे। अभी वन्डर खाते हो कितनी छोटी चीज़ है। एक भी मनुष्य अपन को आत्मा नहीं जानते। आत्मा को रियलाइज़ नहीं करते कि आखरीन आत्मा क्या चीज़ है। अभी तुम समझते हो हमारी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। 84 जन्म कोई सभी थोड़े ही लेते हैं। कोई तो एक जन्म भी लेते हैं। आत्मा कितनी छोटी है उनमें सारा पार्ट है। बाबा ने समझाया है तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। पार्ट बजाने वाली आत्मा है। आत्मा अकेली क्या करेगी। शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। सतयुग में आत्मा एक ही शरीर लेकर 150 वर्ष पार्ट बजाती है। जैसे शूट हो जाता है। फिर 5000 वर्ष बाद वही एक्ट चलेगी। तुम भी अभी पुरुषार्थ करते हो यह बनने लिए। यहाँ तुम आये ही हो यह बनने लिए। सत्य ना0 की कथा सुनते थे; परन्तु वह तो सभी है झूठ। अमरनाथ पार्वती की कथा सुनते थे; परन्तु क्या सुनाते थे वह किसको भी पता नहीं। अमरपुरी का मालिक बनाते थे वह भी कैसे। द्रौपदी के लिए दिखाते हैं कि वह पुकारती थी नंगन होने से बचाओ। अच्छा फिर क्या करेगी। नंगन होने का अर्थ क्या था। कुछ भी नहीं समझते। क्या तुम पहले समझते थे? यह मालूम था कि यह ही फिर ल0 बनने वाली हैं जो फिर 21 जन्म कब नंगन होगी ही नहीं। अभी तुम जानते हो और खुद पुरुषार्थ भी करते हो भविष्य में ऊँच पद पाने। बाकी भक्तिमार्ग की कथाएँ तो ढेर सुनते आये। तीजरी की भी कथा सुनाते हैं ना; परन्तु तीसरे नेत्र

के अर्थ का भी किसको पता नहीं है। अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता है। बाप ही आकर ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। जिससे सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को तुम जान जाते हो। यह ड्रामा कैसे चक्र लगाता है, कितनी आयु है, तुम जानते हो। टाइम भी तुम देते हो ना सतयुग को इतने वर्ष, त्रेता को इतने वर्ष.....फिर भक्तिमार्ग में तुम लाखों वर्ष कहने लग पड़ेंगे। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। अभी तुम यहाँ सुनते हो तो भक्ति और ज्ञान में रात–दिन का फर्क दिखाई पड़ता है। कहते हैं ना इसमें तो रात–दिन का फर्क है। यह क्यों जाता है। रात को रात, दिन को दिन कहा जाता है। इसमें दिन और रात की फर्क की क्या बात है। रात और दिन की तो भेंट की भी नहीं जाती है फिर ऐसा क्यों कहते हैं। अभी यह है बेहद की बात। आधा कल्प सतयुग त्रेता तुम राज–भाग पाते हो उसको कहा जाता है दिन। फिर आधा कल्प तुम भक्ति में आते हो इसको कहा जाता है रात। बाप आकर तुमको समझाते हैं अभी फर्क देखा। ज्ञान दिन और भक्ति रात का फर्क। रावण के राज्य में है दुख। राम के राज्य में है सुख। कितना फर्क हो गया है। यहाँ अभी तुम आते हो स्वर्ग वासी बनने लिए। कितनी खुशी से आते हो। तुम्हारी खुशी गाई हुई है गोपीवल्लभ के गोप–गोपियों से पूछो। गोपी वल्लभ तो शिवबाबा हुआ ना। एक बल्लभ के सभी गोप–गोपियाँ हैं। तो प्रजापिता ब्रह्मा हो जाता। और फिर आत्मा के रूप में सभी एक बाप के बच्चे हैं। तो यह नालेज तुमको अभी मिलती है। आत्माएँ तो सभी भाई2 हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे बनते हो तो भाई बहन हो जाता है। यह भी समझाया जाता है कि बहन भाई क्यों बनाते हैं; क्योंकि बहन भाई का नाता प्यार का रहता है। उसमें स्त्री पुरुष की दृष्टि नहीं जावेगी; परन्तु देखा जाता है इस नाते में भी नाम–रूप में आ जाते हैं तो इससे भी ऊपर ले जाते हैं एक/दो को आत्मा भाई2 समझो। यह तो जानते हो हम आत्मा पढ़ती हैं। परमपिता परमात्मा हमको पढ़ाते हैं। आत्मा को यह कान मिली है सुनने लिए। तुम असल में हो आत्मा; परन्तु अपन को देह समझ बैठे हो। अच्छा फिर प्रश्न उठता है क्या सतयुग में भी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे? नहीं। यह अभी के लिए है; क्योंकि अभी पतित से पावन बनना है। वहाँ कोई देही अभिमानी होकर नहीं चलेंगे। अभी कहा जाता है अपन को आत्मा समझो। हम आत्मा हैं फलाने नामरूप वाली। वहाँ ऐसे नहीं कहना होता है। यहाँ कहा जाता है क्योंकि पावन बनकर जाना है। वहाँ तो सीढ़ी उतरनी है ना। एक एक प्वाइंट अच्छी रीत धारण करनी समझनी है। घर–गृहस्थ में रहते भी अपना पाठ नहीं भूलना है। जैसे गाय खाना खाती है फिर उगारती रहती है। तुमको भी नालेज भूलनी न चाहिए। इसमें मंथन करना होता है। एकान्त में सुमिरण करना चाहिए। सिमर2.....अच्छी सिमरो औरों को भी सुनाना है। सिमर2 सुख पाओ अर्थात् सुखधाम का मालिक बन जावेंगे। कल कलेश, बीमारी आदि सभी छूट जावेंगे। अनेकों को सुमिरण करने से रोगी बन जाते हो। उनको ही कहा जाता है दुखधाम। तमो0 है ना। यह है रावण राज्य। नर्क। सतयुग को कहा जाता है स्वर्ग। सुख और दुख में रात दिन का फर्क कहते हैं। कोई चीज़ होती है कहेंगे आठ आने गज है और यह 5रुपये गज है। यह तो रात दिन का फर्क है। तुमको भी समझना चाहिए स्वर्ग और नर्क में रात दिन का फर्क है। स्वर्ग में सदैव सुख है। नर्क में सदैव दुख है। वहाँ है अपार सुख। यहाँ है अपार दुख। यह नर्क है। मूल बात है नर्क और स्वर्ग को समझना। स्वर्ग कितना समय चलता है नर्क कितना समय चलता है। बाप तुम बच्चों को बहुत2 सुख देते हैं। बाप स्वर्गवासी बनाते हैं। समझना चाहिए हम स्वर्ग के कितने अथाह सुख देखते हैं। यहाँ तो दुख ही दुख है। फिर भी तुम यहाँ आते हो तो उस दुनिया का कुछ भी याद नहीं पड़ता है। वह तो सभी झूठी बातें हैं। इसलिए उनका कुछ भी ख्याल नहीं चलता। अभी अगर लाखों वर्ष स्वर्ग का देते हैं तो जरूर नर्क को थोड़े वर्ष देंगे ना। तो यह भी कहे ना बाबा आप सुख तो बहुत लाखों वर्ष देते हो दुख तो बहुत थोड़ा देते हो। यह भी समझ चाहिए ना। बाप बैठ समझाते हैं यह कल्प ही 5000 वर्ष का है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। सतयुग है स्वर्ग। 16 कला सम्पूर्ण। फिर दिन प्रतिदिन मनुष्य वृद्धि को पाते जाते हैं। पहले जरूर थोड़े होंगे। उन्हों को कहा जाता

है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। नानक ने भी कहा है मानुष से देवता किये करत न लागे वार। कब? सुनते तो हैं ना। भगवान ने मनुष्य को देवता, नर्क को स्वर्ग बनाया; परन्तु ग्रन्थ पढ़ने वाले यह थोड़े ही समझते हैं। है तो बहुत क्लीयर। मनुष्य को देवता बनाया। देवता हैं तो पावन। उनको वायसलेस वल्ड कहा जाता है, पवित्र दुनिया। श्विालय। यह है अपवित्र दुनिया वैश्यालय। मनुष्या से देवता किये करत न लागे वार। कितना समय? सेकेन्ड। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। एक सेकेण्ड में कौड़ी से हीरे जैसे बन सकते हैं। तुम कहते हो हम आये हैं कौड़ी जीवन से हीरे जीवन बनने। यह दैवी देवताएँ हीरे जैसे हैं। तब उनके आगे जाकर नमस्कार करते हैं। तुम कहेंगे हम यह बनते हैं। कल्प2 बनते आये हैं। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग में तुम जो कुछ सुनते आये हो वह भी ड्रामा में नूँध है। अथाह ढेर के ढेर कथाएँ हैं। तुमको तो सिर्फ याद करना है हम आत्मा हैं, और बाप को याद करना है। बाबा आया हुआ है। बस बाबा कहना कितना मीठा है। और सीधा अक्षर है। सभी का बाप परमधाम से आया हुआ है। बाप आकर टीचर बन पढ़ाते हैं। मनुष्य से देवता बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम पतित हो ना। कहते भी हो हे पतित पावन.....तो क्या तुमको गंगा वा पानी का सागर याद आता है? परमपिता परमात्मा को याद करते हो ना। आत्मा अपने बाप को याद करती है। आत्मा एक हद का बाप दूसरा है बेहद का बाप। वह है सभी आत्माओं का बाप; परन्तु यर्थाथ रीति कोई भी न अपन को न बाप को समझ सकते हैं। ऐसे ही सिर्फ तोते मिसल कह देते हैं। इसलिए जानवरों मिसल कहा जाता है। समझते कुछ भी नहीं। सिर्फ बुलाते रहते हैं बाबा आओ। भगवान सर्वव्यापी है ठिक्कर भित्तर में है तो ठिक्कर भित्तर को बोलो ना कि ठिक्कर से अब बाबा बन जाओ। अपन पर तो लज्जा आनी चाहिए हम रावण के संग में कैसे बन्दर, भूलड़े, रीच आदि क्या2 बन गये हैं। बिल्कुल ही बेसमझ बन गये हैं। बाबा खुद कहते हैं हमने तुमको कितना समझदार बनाया। फिर तुम इतने बेसमझ बन पड़े हो। तुम कितने समझदार थे। अभी बिल्कुल ही बेसमझ बन पड़े हो। जबसे भक्ति शुरू हुई है यह उल्टी बातें सुनते आये हो। बाप बैठ समझाते हैं पहले2 अव्यभिचारी भक्ति थी। शिव को ही पूजते थे। जिसने तुमको पूज्य बनाया उनकी ही पुजारी बन भक्ति की। यह तो समझ की बात है ना। बाप तुम बच्चों को समझाते हैं तो फिर तुमको भी टीचर बन समझाना चाहिए ना। सर्विस पर हाजिर रहना चाहिए। बाबा के पास कलकत्ते से समाचार आया। देहली में फोन किया कि बड़ी कॉनफ्रेन्स में अंग्रेजी में बोलने वाला चाहिए। 10/20 मिनट का टाइम मिला है अमेरिकन के तरफ से सभी यहाँ आये हुए थे। वहाँ कोई अंग्रेजी में होशियार तो है नहीं। कानफ्रेन्स बड़ी अच्छी थी। सभी धर्म वाले आकर इकट्ठे हुए। देहली में मोहिनी को बोला कि आओ; क्योंकि दिल्ली से कलकत्ता कोई दूर थोड़े ही है। एरोप्लैन में बैठा और यह पहुँचा। इसमें मुँझने की तो दरकार ही नहीं। उनको कहा हम आवेंगे; परन्तु फिर गई नहीं। क्यों नहीं गई। कोई समाचार नहीं। बुखार एक आधा डिग्री हो तो भी सर्विस पर एकदम भागना चाहिए। योगी को कोई बात ही(की) परवाह नहीं होती। यहाँ तो ऐसे हैं आधा प्वाइंट बुखार होगा तो भी बस। चिन्तित हो जावेंगे। कहते हैं ना सर्प का मारे सर्प जो सराप मारे। तुम बच्चे तो कहाँ भी यह समझा सकते हो बाप भगवान कहते हैं सुप्रीम सोल आत्माओं को कहते हैं अपन को आत्मा समझ याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। सिर्फ मुझे याद करो और चक्र को याद करो। यही प्राचीन राजयोग बाप आकर सिखलाते हैं। तो उन्हों को भी मालूम पड़े; परन्तु बच्चों में इतना दम नहीं। आखरीन वहाँ कोई गई नहीं। फिर आखीर पढ़कर सुनाया। वह भी क्या सुनाया वह कुछ भी लिखा नहीं है। बाप समझाते हैं तुम तो यहाँ मरने लिए आये हो ना। शरीर का भान छोड़ अपन को आत्मा समझो। यह मरना है ना। अपन को आत्मा समझते2 ही घर जाना है। एक बाप को याद करना है। बाप आते ही हैं जीते जी मरना सिखलाने। इस शरीर को भी भुलाना है। इनसे अलग होना है आपे ही। तुमको काल खावेंगे नहीं। यह प्रैक्टिस करनी है। याद करते2 तुम शरीर छोड़ मेरे पास आ जावेंगे। कोई की याद आई तो पुनर्जन्म लेना पड़ेगा। पिछाड़ी को राजा बहुत खाते हैं। फिर पद भी छोटा मिलेगा। मोचरा न खाने वाले ही ऊँच पद पावेंगे। बाप इस शरीर द्वारा बैठ समझाते हैं। मैंने इस शरीर में प्रवेश किया है। इनकी भी वानप्रस्थ अवस्था है। इन द्वारा

तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ। यह ब्रह्मा नहीं जानते। इनमें बाप प्रवेश होकर पढ़ाते हैं। नहीं तो कैसे पढ़ावें। उनको मुख तो चाहिए ना। मनुष्य गऊमुख पर जाने कितने धक्के खाते हैं। कितना दूर2 गऊमुख पर जाते हैं। यहाँ भी गऊ मुख है। 700 सीढ़ी है। है सभी फालतू। सिर्फ पत्थर की गऊ का मुख है। चश्मा(झरना) का पानी बहता है। चश्मे का पानी गर्म भी निकलता है। ठण्डा भी निकलता है। अभी तुम समझते हो गऊमुख किसको कहा जाता है। यह है नालेज। जो बाप इन द्वारा समझाते हैं। वह फिर अमृत समझ कितने धक्के खाते हैं। वास्तव में यह है ज्ञान की बातें। उन्होंने फिर कृष्ण को नालेजफुल कह दिया है। कृष्ण को याद करना तो बहुत सहज है। भक्तिमार्ग में तुम कृष्ण को बहुत याद करते हो। कृष्ण के लिए तुम जैसे कि मरते हो। जैसे वह भूख हड़ताल आदि करते हैं ना। तुम भी हड़ताल करते हो सात रोज़ खाते पीते नहीं हो। यह कोई मालूम नहीं रहता कृष्ण मिलेगा वा नहीं। मुफ्त में हड़ताल कर देते। उन लोगों को तो फिर भी कुछ न कुछ मिल जाता है, कोई छुड़ाते लेते हैं। तुमको तो न कोई छुड़ाते हैं न कुछ मिलता है। अभी बाप कहते हैं बच्चे तुम अपन को प्रिन्स–प्रिन्सेज तो समझो। बाबा को तो बहुत खुशी होती है हम यह बनूँगा। पढ़ाई यह भी पढ़ते हैं तुम भी पढ़ते हो। इनको तो बहुत खुशी रहती है। मैं तो बूढ़ा हूँ, जवान हूँ। मेरे अन्दर में तो बहुत खुशी रहती है हम इस पढ़ाई से यह ना0 बनेंगे। पहले तो जरूर प्रिन्स बनेंगे। तुम बच्चे भूल क्यों जाते हो। आत्मा में बुद्धि है ना। ख्याल करो ओ हो। हम आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं इस साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। यह है भाग्यशाली रथ। मनुष्य का ही रथ चाहिए ना। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर तुमको सुनाता हूँ। यह भी सुनते जाते हैं। नर से ना0 बनने की नालेज सुन रहे हैं। सभी से नम्बरवन पतित और वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। यह बूढ़ा भी पढ़ता है। दिल में है मैं भी नर से ना0 बनता हूँ। सतयुग में हम महलों में जावेंगे। भगवान पढ़ाते हैं उसमें गड़बड़ थोड़े ही हो सकती है। हम तो सभी स्टूडेन्ट्स हैं ना। सभी आपस में भाई2 हैं। एक बाप से पढ़ते हैं विश्व का मालिक बनने लिए। तो इतनी खुशी है? कई कहते हैं हम बन्धन में हैं। बच्चों का, पति का बन्धन है। बाप कहते हैं पढ़ना तो है ना। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। और 84 का चक्र भी समझना सहज है। विकारी न बनना है; परन्तु लाचारी पकड़ लेते हैं तो बाप कहते हैं तुम्हारा दोष नहीं; क्योंकि तुम परवश हो। इस जन्म को छोड़ो। अनेक जन्मों के पाप सिर पर हैं उन्हों को याद की यात्रा से काटो। तुम बाप की याद में लग जाओ। वह सभी हैं कीड़े। तुम हो ब्राह्मण। तुमको भूँ2 कर आप समान बनाना है। कहते भी हैं बाबा फलानी ब्राह्मणी ने हमको भूँ2 कर आप समान बनाया है। तुम बच्चे जानते हो सतगुरु मिलता ही है संगम पर। बाकी तो अनेक गुरु हैं द्वापर कलियुग में। क्या2 करते रहते हैं। कितने बड़े2 टाइटल देते हैं। श्री श्री 108 जगदगुरु वास्तव में जगदगुरु तो सिवाय एक के और कोई मनुष्य हो न सके; परन्तु किसकी बुद्धि में आता नहीं रीढ़े मिरई सभी वूथ कारी। जगतगुरु अर्थात् सारी सृष्टि का गुरु वह तो एक है ना। जो सभी की सदगति करते हैं। फिर यह टाइटल उन्होंने क्यों रखा है; परन्तु सभी मनुष्य हैं जैसे वूथ कारी रीढे। गदहे का भी मिसाल देते हैं ना। कितना भी श्रृंगार करो फिर मिट्टी में मैला हो जावेगा। बाप भी इतना श्रृंगार करते हैं यह बनने लायक बनाते हैं फिर भी सारा श्रृंगार गंवा देते हैं। माया एक ही थप्पड़ से सारा श्रृंगार उड़ा देती है। इसलिए रावण के सिर पर गदहा दिखाते हैं। अभी बाप कहते हैं भक्ति की बातें सभी भूल जाओ। एक बाप को ही बहुत प्यार से याद करना है। बाकी तो यह सभी खत्म हो जाना है। सभी मिट्टी में मिल जावेगा। कोई के भी हाथ में कुछ नहीं आवेगा। गायन भी है मिरवा मौत मलुका शिकार। अन्दर में बड़ी खुशी होती है कब विनाश हो तो हम स्वर्ग में जावें। बाप कहते हैं अभी तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। फिर तो डिग्री कम हो जावेगी। अभी तो भगवान आकर पढ़ाते हैं। कितने भाग्यशाली हो। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। वह गीता सुनाने वाले तो तोते मिसल सिर्फ सुनाते रहते हैं। समझते कुछ भी नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।